पाठ - 4
तौहीदे अस्मा व सिफ़ात (2)

الدرس الرابع - هندي
تابع توحيد الأسماء والصفات

विशेषताओं के उदाहरण के सिलसिले में अल्लाह फ़रमाता है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ

और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं। और उनके इस कथन के कारण ही उनका तिरस्कार किया गया। बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं और वह जिस तरह चाहता है खर्च करता है। (सूरह अलमायदा, आयत 64)

यहां पर अल्लाह तआला ने अपने लिए दो हाथों को साबित किया है और उनकी विशेषता बताते हुए फरमाया है कि वे दोनों खुले हुए हैं। यानी वह बहुत नवाज़ने वाला है। इस लिए हम पर वाजिब है कि हम ईमान रखें कि अल्लाह तआला के दो हाथ हैं और दोनों उदारता और नेमतों के ताल्लुक़ से खुले हुए हैं। लेकिन हम पर यह भी ज़रूरी है कि हम इन दोनों की कैफ़ियत तक पहुंचने के लिए अपने दिल में कल्पना न करें और न अपनी ज़ुबान से अदा करें कि वह हाथ कैसा है और न मखलूक़ की हाथों से इसकी मिसाल दें क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿

यानी, उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह सुनने और देखने वाला है। (सूरह अलशूरा, आयत 11)एकेश्वरवाद के इस भाग का सारांश (खुलासा)यह है कि हम उन नामों और विशेषताओं को अल्लाह के लिए बिना किसी हिचकिचाहट या फेर बदल या कमी–बेशी के साबित करें जिन्हें अल्लाह ने अपने लिए साबित किया है या जिन्हें उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साबित किया है। और उसको नकार दें जिसे अल्लाह ने अपने लिए नकारा है या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए नकारा है ।तो आज के इस दरस से हमें यह मालुम हुआ कि एकेश्वरवाद यह है कि अल्लाह ने जिन चीज़ों को अपने लिए विशेष कर लिया है और इबादत (उपासना) के जिन तरीक़ों को अपने लिए अनिवार्य कर दिया है उन तमाम चिजों में हम उसे एक जानें हर तरह के उपासना अराधना भक्ति और पूजापाठ में अल्लाह के साथ किसी को साझेदार ना बनाऐं ।